शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १७ : अंक ३७ : नई दिल्ली : १८-२४ दिसम्बर २०११

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में विचरण कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। पूज्य आचार्यवर स्वस्थ और प्रसन्न हैं। आगामी १५ जनवरी को आमेट पधार जाने की संभावना है। वहां मर्यादा महोत्सव एवं आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के तीसरे चरण की तैयारियां द्रुत गति से चल रही हैं।

संस्मरणों का वातायन : आचार्यश्री तुलसी

अन्तिम सप्ताह का महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम (८८२)

(गुरुदेव तुलसी की आत्मकथा 'मेरा जीवन : मेरा दर्शन' की संपादक साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की कमल से)

१६ जून १९९७ के दिन गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी ने अपनी डायरी लिखी। उसके बाद डायरी के पन्ने खाली हैं। उस दिन की डायरी में उल्लेख है कि १५ जून की रात्रि में नींद नहीं आई। नींद आ जाती है तो मस्तिष्क का वह हिस्सा काम करना बन्द कर देता है, जो विचारों की तरंगे प्रवाहित करता है। नींद नहीं आती है तो वह भाग सक्रिय रहता है। उस स्थिति में मनुष्य कुछ-न-कुछ सोचता रहता है। उस सोच का आधार सकारात्मक और नकारात्मक दोनों हो सकते हैं। शारीरिक, मानसिक या भावात्मक स्थितियों से आहत व्यक्ति की सोच प्रायः नकारात्मक होती है। किन्तु अध्यात्म के हिमालय पर पहुंचकर उसके उच्चतम शिखरों की यात्रा करनेवाले महापुरुषों को निषेधात्मक भाव छू भी नहीं पाते। यही कारण है कि प्राकृतिक चिकित्सा से यथेष्ट लाभ का अनुभव न होने पर भी गुरुदेव के मन में संलेखना/संथारा जैसे उदात्त भावों का उद्भव हुआ।

प्रस्तुत सन्दर्भ में एक सवाल खड़ा होता है कि गुरुदेव ने अपने जीवन के बारे में इतना बड़ा और गहरा चिन्तन किया। पर इस विषय में किसी को सूचित क्यों नहीं किया? इससे भी अधिक विचारणीय प्रश्न यह है कि उन्होंने जिनके साथ अद्वैत स्थापित कर रखा था, जिनको अपना मनोनीत उत्तराधिकारी घोषित कर रखा था और इससे भी आगे जिनको आचार्य पद पर अभिषिक्त कर चुके थे, उन आचार्य महाप्रज्ञ से इस बिन्दु पर परामर्श करना तो दूर, चर्चा तक नहीं की। इसका कारण क्या हो सकता है?

उक्त जिज्ञासा का समाधान खोजते समय आचार्यश्री महाप्रज्ञ के विचारों पर मेरा ध्यान केन्द्रित हुआ। उन्होंने लिखा है 'इसका एक कारण यह है कि गुरुदेव अपने स्वास्थ्य की जटिल स्थिति मेरे सामने रखना नहीं चाहते थे। सन् १९८२ राणावास चातुर्मासिक प्रवास के समय एक मिथ्या अफवाह ने एक सन्देह पैदा कर दिया '२२ जुलाई १९८२ को प्रातः नौ बजे तक ही गुरुदेव के दर्शन हो सकेंगे।' उस समय मेरी मनःस्थिति बहुत जटिल हो गई थी। गुरुदेव ने उसे देखा और कहा 'तुम इस प्रकार विचलित कैसे हो गए?' उसके बाद स्वास्थ्य सम्बन्धी जटिलता की बात मुझे नहीं बताते थे। साधारण-सी बात बता दी जाती।'

एक अन्य कारण की चर्चा करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने लिखा 'दूसरा कारण यह हो सकता है कि 'बोथरा भवन' मैं प्रातःकाल जाता और पांच-दस मिनट वहां ठहरता। स्वास्थ्य के सम्बन्ध में सामान्य-सी चर्चा होती और मैं पुनः 'तेरापंथ भवन' लौट आता। संभवतः गुरुदेव ने सोचा होगा 'तेरापंथ भवन' में जाने के बाद इस विषय में महाप्रज्ञ से चर्चा करेंगे। यह विश्वास नहीं था कि आकस्मिक ढंग से हृदय अपना काम करना बन्द कर देगा। जो कुछ हुआ, आकस्मिक हुआ। इसलिए इस विषय में चर्चा करने का अवकाश ही नहीं रहा।'

मेरी अपनी कल्पना के अनुसार दूसरा संभावित कारण यह हो सकता है १६ जून को प्रातः डॉ. मरोठी, वैद्य महावीरप्रसादजी, वैद्य बद्रीप्रसादजी, अनोपचन्दजी बोथरा आदि अपने निर्धारित क्रम के अनुसार गुरुदेव के

उपपात में पहुंचे। गुरुदेव ने शायद उनके सामने स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार न होने की बात की तो डॉक्टर और वैद्यों ने सुझाव दिया कि एक सप्ताह तक चिकित्सा का क्रम इसी प्रकार चलाकर देखा जाए। वैद्यों की राय के आधार पर ही गुरुदेव ने एक सप्ताह प्रतीक्षा करने का मानस बनाया हो, ऐसा प्रतीत होता है।

१६ जून को दिन में स्वास्थ्य में कुछ सुधार परिलक्षित हुआ, जिसका उल्लेख डायरी में किया गया है। किन्तु उस तात्कालिक सुधार से गुरुदेव का मन आश्वस्त नहीं हुआ। इसीलिए उन्होंने यह भी लिख दिया कि दो-चार दिन ठीक रहने से ही विश्वास जम सकेगा।

मुनिश्री मधुकरजी, मुनिश्री बालचन्दजी आदि कुछ मुनि गुरुदेव के विशेष परिचारक थे। वे उनके निकट रहनेवाले और पास में सोनेवाले थे। रात्रि के समय स्वास्थ्य में कोई उतार-चढ़ाव आता, उसके बारे में प्रातःकाल सूचना उन्हीं से मिलती थी। पर उनके सामने भी कभी संथारे का आशय प्रकट नहीं हुआ। मैं स्वयं भी प्रतिदिन तीन बार 'बोथरा भवन' जाती थी और गुरुदेव के उपपात में बैठने का अवसर पाती थी। किन्तु अव्यक्त रूप में भी इस प्रकार का अहसास नहीं हुआ कि उनका मनोमंथन किस दिशा में चल रहा है।

एकान्तवास के दो सप्ताह में गुरुदेव ने एक ऐसा महत्त्वपूर्ण कार्य अवश्य किया, जिसकी अनेक चिन्तनशील लोगों को प्रतीक्षा थी। वह कार्य था उनकी आत्मकथा के सन्दर्भ में कतिपय विशेष व्यक्तियों एवं प्रसंगों को लिपिबद्ध करवाना। उन दिनों प्रायः आधा-पौन घंटे तक गुरुदेव धाराप्रवाह बोलते जाते और मैं लिखती रहती। उसके बाद मैं कलम रोक लेती और गुरुदेव को विश्राम करने के लिए निवेदन करती। कई बार ऐसा प्रतीत होता कि वे थकान महसूस कर रहे हैं और निवेदन के तत्काल बाद कायोत्सर्ग करने के लिए उद्यत हो जाते। पर कई बार उनकी इच्छा कुछ अधिक समय तक डिक्टेशन देने की रहती। मैं अपना निवेदन दोहराती तो गुरुदेव फरमाते 'तेरापंथ भवन जाने के बाद इतना समय मिलना मुश्किल होगा। तुम यहां जितना काम कर सको, करती रहो। जितना लिख सको, लिखती रहो।' इस कथन के पीछे उनका कोई विशेष अभिप्राय था अथवा महापुरुषों की वाणी सहज रूप में सच हो जाती है, कुछ कहा नहीं जा सकता। पर 'तेरापंथ भवन' पहुंचने के बाद इस कार्य के लिए समय मिला ही नहीं, यह इस बात का स्वयंभू प्रमाण है।

२० जून को जलगांव से महाराष्ट्र के वाणिज्य मंत्री श्री सुरेश दादा जैन, शाकाहार सदाचार समिति के संस्थापक श्री रतनलाल बाफणा आदि दर्शन करने आए। जैन एकता के विषय में चर्चा हुई। जैन अल्पसंख्यक की कोटि में जाएं या नहीं, इस विषय पर संवाद हुआ। गुरुदेव ने कहा 'जैनधर्म मूलतः भारतीय धर्म है। हिन्दू भारतीय समाज और राष्ट्रीयता का प्रतिनिधि शब्द है। इसलिए जैन सामाजिक दृष्टि से हिन्दू हैं, पर धार्मिक दृष्टि से जैन हैं। हिन्दू नाम का कोई धर्म नहीं है। इसलिए बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक की परिभाषा पर विचार करना जरूरी है।' वार्तालाप के दौरान यह प्रसंग भी आया कि इस विषय में जैन समाज के चारों सम्प्रदायों के प्रतिनिधि श्रावकों की एक गोष्ठी की जाए, जिसमें मुक्तभाव से चिन्तन चले। चिन्तन के बाद ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचा जाए। सुरेश दादा ने कहा 'यह प्रस्ताव अच्छा है। मैं इस गोष्ठी के समायोजन का प्रयत्न करूंगा। उसमें जैन समाज के प्रमुख व्यक्तियों को आमंत्रित करने और उन्हें लाने का दायित्व मेरा होगा।'

व्यक्तिगत वार्तालाप के बाद गुरुदेव प्रवचन पंडाल में पधारे। समणीवृन्द के मंगल संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री टी. एम. लालानी ने आगन्तुक महानुभावों का परिचय दिया और साहित्य भेंट कर उनका सम्मान किया।

रतनलालजी बाफणा ने अपने वक्तव्य में कहा 'आज मनुष्य का विकृत होता खान-पान चिन्ता का विषय है। यद्यपि बाहर जो हिंसात्मक अत्याचार हो रहे हैं, वे हमें कम्पित करनेवाले हैं। किन्तु एक बार अपने देश में हो रही हिंसा की ओर ध्यान केन्द्रित करना है। महावीर, बुद्ध और गांधी के देश में हिंसात्मक वातावरण बनना अच्छी बात नहीं है। मांसाहार हिंसा है। पर केवल यही हिंसा नहीं है। प्रतिदिन उपयोग में आनेवाली वस्तुओं में कितनी हिंसा होती है, यह चिन्तन का विषय है। प्रसाधन सामग्री, खाद्य पदार्थ, कपड़े और अन्य कीमती सामान पशुओं को मारकर बनाया जा रहा है। मैं पूज्य गुरुदेव और आचार्यश्री से निवेदन करता हूं कि आपकी वाणी में तेज है, ओज है। आप लाखों लोगों को बदलने की क्षमता रखते हैं। मेरा विश्वास है कि इस देश की जनता को आप जैसे महापुरुष ही हिंसा से उबार सकते हैं।'

वाणिज्यमंत्री श्री सुरेश दादा ने कहा 'तीन वर्षों के बाद आज मेरी भावना फलवान बनी है। तीन साल

पहले मैंने सोचा था कि प्रतिवर्ष पूज्य गुरुदेव के दर्शन करूंगा। मन में आन्तरिक भक्ति-भावना होते हुए भी मैं दर्शन नहीं कर सका। मुझे लगता है कि राजनीति में दिए जानेवाले आश्वासन का असर मेरे संकल्प पर भी आ गया। कल मैं जैनविश्वभारती, लाडनूं गया था। विश्वभारती का अवलोकन कर मन प्रसन्नता से भर गया। अच्छे मनुष्य का निर्माण ऐसे संस्थानों में ही हो सकता है। किसी भी बुराई को मिटाना है तो व्यक्ति-सुधार की प्रक्रिया को अपनाना होगा। संस्कार-निमाण का कार्य बच्चों से प्रारंभ करना होगा। मैं युवकों से कहना चाहता हूं कि वे अपना आदर्श किसी नेता या अभिनेता को नहीं, बल्कि पूज्य गुरुदेव एवं आचार्यश्री जैसे सन्तों को मानें।'

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने अभिभाषण में कहा 'दुनिया बहुत बड़ी है। उसे एक व्यक्ति कैसे समझ सकता है। समस्याओं का आयतन उससे भी बड़ा है। वैदिकों की मान्यता है कि पूर्ण से पूर्ण निकालें, शेष पूर्ण ही रहेगा। जैन दर्शन के अनुसार अनन्त में से अनन्त निकालो, शेष अनन्त ही रहेगा। समस्याओं से बने इस चक्र को देखकर हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठा जा सकता। आवश्यक है कि उसको सुलझाने में हम अपने पराक्रम और सूक्ष्म ज्ञान का उपयोग करें। पराक्रम के मामले में भारत सदा अग्रणी रहा है। पर प्रोद्योगिकी में पीछे रहने से ही इसे हार का सामना करना पड़ा है। शाकाहार जैन दर्शन का मुख्य सिद्धान्त है। भगवान महावीर ने मांसाहार का विरोध उस समय किया, जब श्रमण संस्कृति के अनुयायी बौद्धधर्म में यह निषिद्ध नहीं था। वर्तमान में देश-विदेश में सभी जगह शाकाहार की प्रतिष्ठा बढ़ी है। आज के वातावरण को देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो भगवान महावीर का पुनर्जन्म हो रहा है।'

गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी ने विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा 'आज मैं लगभग दो सप्ताह के बाद प्रवचन सभा में आया हूं। इसमें निमित्त बने हैं जलगांव से आए हुए हमारे जैन बन्धु। महाप्रज्ञजी ने कहा 'आपको प्रवचन में आना है। मैंने कहा 'आपने निमंत्रण दिया है तो आना ही है। मैं नहीं आता था, फिर भी प्रवचन पंडाल वैसे ही भरा रहता था। सब काम वैसे ही होता था। कमी केवल मेरी ही थी।' इस उत्थानिका के बाद गुरुदेव ने भगवान महावीर के पथ पर चलने का संकल्प व्यक्त करते हुए एक गीत का संगान किया। वह गीत था **प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर जीवन अर्पण है सारा।** तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह से पहले बगड़ी में आचार्य भिक्षु की अभिनिष्क्रमण द्विशताब्दी के अवसर पर गुरुदेव द्वारा प्रगीत यह गीत इतना लोकप्रिय बना कि जन-जन के मुंह पर जम गया। गुरुदेव ने जब इसका संगान किया तो हजारों कंठों से निकले स्वरों से पूरा प्रवचन पंडाल थिरकने लगा।

गीत के कुछ पद्यों का संगान करने के पश्चात गुरुदेव ने कहा 'हम प्रभु महावीर के पावन पथ पर चलें, इससे बड़ी बात कोई हो नहीं सकती। भगवान महावीर कोई रूढ़ व्यक्ति नहीं थे, वे जीवन्त व्यक्ति थे, इसलिए पचीस सौ वर्ष बाद भी नित्य नवीन और प्रासंगिक लग रहे हैं। उनका मन्तव्य था सत्य को सदा खोजते रहो, नया रास्ता निकालते रहो। उन्होंने विचार का दरवाजा कभी बन्द नहीं किया। उन्होंने कहा 'तुम सोचो, विचारो और नया मार्ग खोजो।' हमें इस महावीर-वाणी का आधार मिला। इसी आधार पर हम नया सोचते-विचारते रहे हैं, नया खोजते रहे हैं। हम कुछ-न-कुछ करते रहे हैं, इसीलिए हमारा क्रम प्रायोगिक बन गया है। केवल जनता की भीड़ में हमारा विश्वास नहीं है, प्रयोग में विश्वास है। हमने नए-नए प्रयोग किए। जहां कहीं सत्य मिला, हमने शिरोधार्य कर लिया। अपने दिमाग के दरवाजे को सदा खुला रखा जाए तो सत्य को समझना/पाना आसान हो जाता है।'

जैन और जैनत्व के प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए गुरुदेव ने कहा 'धर्म के मामले में धार्मिक लोग भी रूढ़/जड़ बन गए हैं। जिस कुल में व्यक्ति जन्म लेता है, वह उस धर्म के साथ जुड़ जाता है। क्या जन्म से कोई धर्म होता है? एक जैन कुल में किसी बैल ने जन्म लिया, क्या वह जैन हो गया? तेरापंथ कुल में जन्म लिया, क्या वह तेरापंथी हो गया? वह जन्म से जैन या तेरापंथी हो सकता है। पर वास्तव में तो उसे कर्म से जैन या तेरापंथी बनना होगा। बहुत वर्षों पहले जोधपुर के रोटरी क्लब में हमारा प्रोग्राम था। एक पत्रकार ने पूछा 'जैनों की संख्या इतनी कम क्यों है?' मैंने पूछा कितनी है? पत्रकार बोला 'जनगणना के अनुसार तीस-चालीस लाख होगी।' मैंने कहा वे भी जन्मना जैन हैं। जैन कुल में जन्म ले लिया, इसलिए जैन कहलाते हैं। पत्रकार विस्मय के साथ बोला 'तब तो जैन बहुत कम हैं।' मैंने इस कथन के साथ असहमति प्रकट की तो पत्रकार ने जिज्ञासा की 'यह कैसे हो सकता है?' मैंने कहा आप चौंकिए मत। एक दृष्टि से विचार किया जाए तो अजैनों में जैन ज्यादा हैं। वे त्याग

से, वैराग्य से, भावना से और विवेक से जैन हो सकते हैं। पत्रकार ने कहा 'तब तो ठीक है।' मैंने कहा यह मान लिया गया कि जिस कुल में जन्म लिया, वह धर्म हमारा है। यह भूलभरी भ्रान्ति है। हम जन्म से नहीं, कर्म से धार्मिक बनें। अपना सत्य स्वयं खोजें अप्पणा सच्चमेसेज्जा। खैर, मैं अधिक बोलने नहीं आया हूं। एक व्यक्ति की कमी थी, उसे पूरा करने आया हूं। आ गया हूं तो कुछ कहना ही है।'

प्रवचन को एक मोड़ देते हुए गुरुदेव ने कहा 'कल्याण के दो रास्ते हैं स्वयं का प्रकाश और स्वयं का संयम। ये दोनों चीजें नहीं हैं तो क्या होता है? इस स्थिति का चित्रण करनेवाला एक मार्मिक श्लोक है

शृण्वन्ति ये नैव हितोपदेशं, न धर्मलेशं मनसा स्मरन्ति।
रुजः कथंकार मथापनेयास्तेषामुपायस्त्वयमेक एव ॥

जो मनुष्य धर्मोपदेश को सुनते ही नहीं और न धर्म के लेश का भी मन से स्पर्श करते हैं, उनके मानसिक और भावनात्मक रोग कैसे दूर किए जा सकते हैं? जबकि उन रोगों को दूर करने का एकमात्र उपाय है हितोपदेश का श्रवण और धर्म का आचरण।'

प्रवचन के उपसंहार में गुरुदेव ने कहा 'आज मैं कुछ अधिक बोल गया हूं। मैंने सोचा पन्द्रह दिनों से बोल रहा हूं तो दो-चार मिनट ज्यादा बोल दूं। इतनी बड़ी परिषद शान्ति से बैठी है, यह श्रद्धा भावना का परिणाम है। जनता में श्रद्धा बढ़ती रहे, यह अपेक्षा है। मूल बात यह है कि मनुष्य को मनुष्य बनाने का प्रयत्न किया जाए। सब लोग मानवता को आगे बढ़ाएं, इन्सानियत को आगे बढ़ाएं और पर्यावरण की समस्या को सुलझाएं। आप तेरापंथी हैं या नहीं, जैन हैं या नहीं, किन्तु मैन हैं। मैन हैं तो अच्छे मैन बनें। अच्छे मैन सहज रूप में जैन बन सकते हैं। जैन श्रावक का जीवन कैसा हो? इस सन्दर्भ में आप 'श्रावक-सम्बोध' पुस्तक पढ़ें और उसके अनुरूप जीवन बनाएं। फिर हमें जैनत्व की सुरक्षा के लिए चिन्ता नहीं करनी होगी।'

देश-विदेश में रहनेवाली समाज की किशोरपीढ़ी समय-समय पर गुरुदेव के दर्शन करने आती रहती थी। बच्चों को जैनधर्म के बारे में प्राथमिक जानकारी दी जाती। उनकी जिज्ञासाएं मुखर होतीं। कभी उन्हें गुरुदेव का सान्निध्य मिलता और कभी साधु-साध्वियों के पास प्रश्नोत्तर चलते रहते। गुरु-दर्शन कर लौटते समय उन्हें कहा जाता कि वे जैनधर्म के बारे में अपनी जानकारी बढ़ाते रहें। बच्चे पूछते कि वे कौन-सी पुस्तक पढ़ें, जिससे उनका नॉलेज बढ़ता जाए। इतिहास और दर्शन दोनों विषयों की कई अच्छी पुस्तकें हैं। पर वे किशोरपीढ़ी के लिए उपयोगी नहीं हैं। मर्यादा-महोत्सव के बाद लाडनूं-प्रवास में प्रस्तुत सन्दर्भ में मैंने गुरुदेव से निवेदन किया। गुरुदेव ने इस बात को गहराई से लिया और चिन्तन भी किया कि बालपीढ़ी के लिए उपयोगी एवं रुचिवर्धक साहित्य का निर्माण कैस किया जा सकता है।

गंगाशहर पधारने के बाद गुरुदेव का स्वास्थ्य पूर्ण रूप से अनुकूल नहीं रहा, फिर भी समय-समय पर चिन्तन चलता रहता था। एक दिन गुरुदेव के उपपात में आचार्यश्री महाप्रज्ञ आसीन थे। हम कुछ साध्वियां भी उपस्थित थीं। गुरुदेव ने आचार्यश्री से कहा 'जैन दर्शन पर एक पुस्तक तैयार करनी है। जैसे आमेट में जैनधर्म के बारे में एक श्लोक आदर्शोऽत्र जिनेन्द्र आप्तपुरुषः रत्नत्रयाराधना तैयार किया था, वैसे ही संस्कृत भाषा में बीस-पचीस श्लोकों का निर्माण कर उनकी व्याख्या लिखी जाए। इससे जैन दर्शन के बारे में एक सरल पुस्तक तैयार हो सकती है। रात्रि के समय हम बैठें और यह कार्य हो जाए।'

उन दिनों रात्रि के समय गुरुदेव के शरीर में प्रायः सुस्ती-सी रहती थी। इसलिए प्रस्तुत विचार को भविष्य पर छोड़ते हुए आचार्यश्री ने निवेदन किया 'गुरुदेव का स्वास्थ्य थोड़ा ठीक हो जाए, फिर यह कार्य प्रारंभ किया जाए।'

उपयोगी साहित्य का निर्माण गुरुदेव की रुचि का विषय था। 'श्रावक-सम्बोध' की रचना के बाद गंगाशहर में उन्होंने उसका भाष्य लिखाना भी प्रारंभ किया। किन्तु वह कार्य भी आगे नहीं बढ़ सका। इस विषय में उनकी और भी बहुत कल्पनाएं थीं। पर नियति का योग ही ऐसा बना कि वे साकार नहीं हो पाईं।"

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आमेट की ओर

पदार्पण, अवलोकन और उद्‌बोधन

६ दिसम्बर। आज प्रातः शास्त्रीनगर से पूज्य आचार्यप्रवर नागोरी गार्डन स्थित तेरापंथ भवन में पधारे। वहां अपना संक्षिप्त उद्‌बोधन प्रदान करने के बाद सरकारी हॉस्पिटल महात्मा गांधी चिकित्सालय में पदार्पण हुआ। वहां आचार्यश्री महाप्रज्ञ डीलक्स कॉटेज वार्ड का उद्‌घाटन हुआ। इस अवसर पर विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष श्री देवेन्द्रसिंह आदि अनेक विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे। वहां से पूज्यप्रवर रामद्वारा धाम पधारे। आचार्य भिक्षु के मित्र स्वामी रामचरणजी महाराज की तपोभूमि रहे इस स्थान पर लगभग २५० वर्ष पूर्व रामस्नेही सम्प्रदाय की शाहपुरा शाखा का प्रवर्तन हुआ। उनकी गादी यहां स्थापित है। पूज्यवर रामद्वारा से संलग्न रामस्नेही चिकित्सालय पधारे। यहां प्रबन्ध समिति के सचिव श्री गोपाल काबरा, वरिष्ठ सदस्य श्री सतीश भदादा, श्री रामस्वरूप सोमानी, श्री अशोक अजमेरा सहित अनेक गणमान्य लोगों ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया और वहां चल रही चिकित्सकीय प्रवृत्तियों की अवगति दी। प्रबन्ध समिति ने बताया--'यहां सभी संतों का इलाज निःशुल्क होता है।' रामस्नेही चिकित्सालय से आर. के. कालोनी आदि उपनगरीय क्षत्रों के लोगों को मंगलपाठ सुनाकर आचार्यप्रवर प्रवास स्थल पर पधार गए।

अमृत समवसरण में समायोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगाान किया। संस्कार भारती के अध्यक्ष श्री मूलचन्द अजमेरा ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ कन्यामंडल की सुश्री शिल्पा सेठिया, पायल कावड़िया एवं प्रज्ञा डागा आदि कन्याओं ने भगवान महावीर, ग्यारह आचार्यों व साध्वीप्रमुखाजी के स्केच भेंट किए। विवेकानन्द केन्द्र की सुमन बाहेती ने गीत प्रस्तुत किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'धर्म व्यक्ति को सब कुछ देता है, बशर्ते कि वह धर्म के प्रति समर्पित हो। धर्म-पथ पर चलने वालों में सर्वस्व न्योछावर की भावना होनी चाहिए।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'महापुरुषों द्वारा उपदिष्ट मार्ग पर चलने से आत्मकल्याण संभव है। आत्मा अमर है, अजन्मा है। गीता में भी कहा गया है--जिस प्रकार व्यक्ति पुराने वस्त्र त्याग कर नवीन वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा जीर्ण शरीर को त्याग कर नया शरीर धारण करती है। जन्म लेनेवाले की मृत्यु निश्चित है और देहातीत होने से ही मुक्ति होती है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

मध्याह्न में पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में मुम्बई से समागत श्री उत्तम माहेश्वरी ने गाय के महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उसकी उपयोगिता पर विभिन्न कोणों से व्याख्या की।

आज तेरापंथ युवक परिषद द्वारा अग्रसेन भवन में 'व्यक्तित्व विकास एवं कैरियर' विषय पर मुनि दिनेशकुमारजी के उपपात में आयोजित संगोष्ठी में श्री सुशील जालान (जयपुर), श्री श्रेयांश कोठारी (जोधपुर) ने व्यक्तित्व विकास के सूत्रों की चर्चा करते हुए केरियर चयन की जानकारी दी।

सायं आचार्यवर ने शास्त्रीनगर क्षेत्र के श्रद्धालु परिवारों के घरों को अपनी चरणरज से पावन किया। रात्रि में खचाखच भरे प्रवचन पंडाल में भक्ति संगीत संन्ध्या का आयोजन हुआ, जिसमें श्रद्धानिष्ठ संगायक श्री कमल सेठिया व संगायिका मीनाक्षी भुतोड़िया ने सुमधुर भजनों को प्रस्तुति दी। देर रात तक चले इस कार्यक्रम में भक्ति संगीत की सरिता प्रवाहित होती रही।

प्रबुद्ध महिला सेमिनार

आज मध्याह्न में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी के उपपात में तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'कन्या की जिम्मेदारी : वहन करे नारी' विषयक प्रबुद्ध महिला सेमिनार का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. लाडकुमारी जैन, अ.भा.ते. महिला मंडल की महामंत्री श्रीमती पुष्पा बैद, कोषाध्यक्ष श्रीमती विमला दूगड़, पूर्व अध्यक्ष श्रीमती सौभाग बैद ने अपने विचार व्यक्त किए। स्थानीय मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कीर्ति बोरदिया ने समागत अतिथियों का स्वागत किया। मंडल की प्रभारी साध्वी कल्पलताजी ने अपने वक्तव्य में महिलाओं को कर्तव्य पालन की प्रेरणा दी। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा

'बच्चों को संस्कार देने का दायित्व महिलाओं पर है। बच्चे संस्कारित होंगे तो परिवार और समाज भी संस्कारित होगा।'

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'नारी जाति को जागृत करने के लिए पूज्य गुरुदेव तुलसी ने अथक श्रम किया। नारी शक्ति का प्रतीक है, परिवार की धुरी है। आज परिवार को बांधे रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसके लिए एक्सेप्ट, एप्रिसियेट व एडजस्ट जरूरी हो गया है।' कार्यक्रम का संचालन स्थानीय महिला मंडल की मंत्री श्रीमती आशा संचेती ने किया। आज के कार्यक्रम में महिला मंडल के साथ अनेक महिला संगठनों ने भाग लिया।

महाश्रम के पर्याय : परमपूज्य श्री महाश्रमण

७ दिसम्बर। भीलवाड़ा के व्यस्ततम प्रवास का चतुर्थ और अन्तिम दिन। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः लगभग साढ़े सात बजे प्रवास स्थल से प्रस्थान कर अरिहन्त हॉस्पिटल पधारे। हॉस्पिटल के चेयरमैन श्री चन्द्रसिंह कोठारी, मंत्री श्री नवरतन सूर्या आदि कार्यकर्ताओं और चिकित्सकों ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए हॉस्पिटल के विषय में विस्तार से अवगति दी। आचार्यवर ने हॉस्पिटल के तीनों तलों का अवलोकन किया। तदुपरान्त संक्षिप्त कार्यक्रम में डॉ. हरीश मारू आदि ने हॉस्पिटल को पावन करने के लिए पूज्य आचार्यवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में कहा--'अरिहंत के नाम से युक्त इस चिकित्सालय के संदर्भ में जानकारी मिली। यहां आने वाले मरीजों की औषधीय चिकित्सा का प्रयत्न होता है, साथ-साथ उन्हें चित्तसमाधि पहुंचाने का भी प्रयास होता रहे। उन्हें ध्यान-योग का प्रशिक्षण भी मिलता रहे तो बाह्य उपचार के साथ-साथ आन्तरिक उपचार भी हो सकेगा।'

अरिहन्त चिकित्सालय से प्रस्थान कर आचार्यवर शास्त्रीनगर स्थित अनेक श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श कर लगभग साढ़े नौ बजे अणुव्रत साधना सदन विद्यालय में पधारे। सत्ताईस हजार वर्गफीट में विस्तीर्ण इस विद्यालय परिसर में समायोजित एक संक्षिप्त कार्यक्रम में स्थानीय विधायक श्री बिट्‌ठलशंकर अवस्थी, भीलवाड़ा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री भैरूंलाल बाफना एवं मंत्री श्री शैलेन्द्र बोरदिया ने आचार्यवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। शासनश्री मुनि सुखलालजी ने विद्यालय के प्रारंभिक इतिहास के विषय में अवगति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'अणुव्रत के नाम से जुड़े हुए इस विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के जीवन में अणुव्रत का प्रभाव रहे। समाज के कार्यकर्ता इस दृष्टि से जागरूक रहें। कार्यक्रम के उपरान्त पूज्य आचार्यवर ने विद्यालय के भवन का अवलोकन किया।

विद्यालय से प्रस्थान कर पूज्य आचार्यवर शास्त्रीनगर के अनेक घरों का स्पर्श करते हुए नागोरी गार्डन पधारे और अनेक श्रद्धालुओं की भावना को परितृप्त किया। आचार्यवर का जहां-जहां पदार्पण हो रहा था, आसपास रहने वाले लोग भी अपने घरों में पदार्पण की प्रार्थना कर रहे थे और करुणानिधान आचार्यवर उनकी भावनाओं को तृप्ति प्रदान कर रहे थे। इस प्रकार लगभग आठ किमी. की यात्रा, करीब सौ घरों का स्पर्श और दो कार्यक्रमों को सम्बोधित कर लगभग ११ बजे आचार्यप्रवर प्रवास स्थल पर पधारे। अब तक आपने पानी भी ग्रहण नहीं किया था। कुछ क्षणों में ही अत्यल्प पेय आदि ग्रहण कर पूज्यवर प्रवचन स्थल पर पधार गए। वहां पधारते ही आचार्यवर ने विशाल जनमेदिनी को संबोधित करना प्रारंभ कर दिया। ऐसा लग रहा था कि महातपस्वी आचार्यवर के लिए कार्यान्तर ही विश्राम है और महाश्रम एवं महाश्रमण दोनों शब्द एक दूसरे के पर्याय हैं।

अभिशाप है अज्ञान

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'व्यक्ति के लिए अज्ञान अभिशाप होता है। क्योंकि ज्ञान के अभाव में वह अपने हित-अहित की पहचान नहीं कर पाता है। जिसका अज्ञान सघन है, वह संयम की साधना भी कैसे कर सकेगा? अज्ञानी मनुष्य जीवन का लाभ नहीं उठा पाता। अतः व्यक्ति सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहे। सम्यक् ज्ञान तीसरे नेत्र के समान है। यह उद्‌घाटित हो जाए तो व्यक्ति स्व और पर, दोनों का कल्याण करने में समर्थ बन सकता है। जीवन में सम्यक्ज्ञान के अभाव में एक बड़ी कमी रह जाती है। यदि सम्यक्ज्ञान और सम्यक् आचार--इन दोनों का योग हो जाता है तो जीवन धन्य बन जाता है।' आचार्यवर के

प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

मध्याह्न में लाठी कॉमर्स कॉलेज के विद्यार्थियों ने आचार्यवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित होकर पावन संबोध प्राप्त किया। विद्यार्थियों ने पूज्य आचार्यवर की प्रेरणा से नशामुक्ति का संकल्प भी स्वीकार किया। अफीम नशामुक्ति केन्द्र भीलवाड़ा में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे राजस्थान के विभिन्न संभागों के लोगों ने आचार्यवर से अफीम सेवन का परित्याग किया। चार दिनों तक प्रवास संबंधी विभिन्न व्यवस्थाओं का संचालन करने वाले स्थानीय कार्यकर्ताओं ने पूज्यवर की सन्निधि में उपस्थित होकर आशीर्वाद प्राप्त किया। अपराह्न में अणुव्रत प्रभारी शासनश्री मुनि सुखलालजी के उपपात में भीलवाड़ा, चित्तौड़ और अजमेर जिले के अणुव्रत से संबद्ध कार्यकर्ताओं की प्रशिक्षण कार्यशाला समायोजित हुई। कार्यशाला में कार्यकर्ताओं द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत की गई और भावी कार्ययोजनाओं के निर्धारण का चिंतन किया गया। कार्यकर्ताओं को मुनिश्री की प्रेरणा प्राप्त हुई।

सायंकालीन आहार के पश्चात आचार्यवर महावीर मार्ग नामक उपनगर में पधारे और वहां अनेक श्रद्धालुओं के घरों का स्पर्श किया। रात्रि में आचार्यवर के चारदिवसीय प्रवास की संपन्नता के अवसर पर मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। भीलवाड़ा के श्रद्धालुओं ने आगामी यात्रा के लिए मंगलभावनाएं अभिव्यक्त कीं।

इस प्रकार पूज्य आचार्यवर का यह चारदिवसीय भीलवाड़ा प्रवास अत्यन्त व्यस्त और कार्यकारी रहा। इस प्रवास में जहां भीलवाड़ा प्रवासी श्रद्धालुओं ने अपने आराध्य की निकट से उपासना का भरपूर लाभ लिया, वहीं यातायात की सुविधाओं के चलते बाहर से आने वाले दर्शनार्थियों का भी तांता लगा रहा। स्थानीय जैन एवं जैनेतर समाज में भी आचार्यवर के दर्शन हेतु तीव्र आतुरता देखने को मिली। प्रवास स्थल हर समय दर्शनार्थियों से खचाखच भरा रहा।

भारत विकास परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भारतीय जनता पार्टी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, अखिल भारतीय कांग्रेस, मानव सेवा संस्थान, जैन जाति युवा समिति, गुरु नानक सभा, गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, महावीर इंटरनेशनल, मुस्कान क्लब, मीरा संस्था, नई दिशाएं, नशा मुक्ति केन्द्र, अफीम नशामुक्ति केन्द्र, सीतादेवी कॉलेज, अखिल भारतीय माहेश्वरी समाज, ब्राह्मण समाज, सिंधी समाज, मुस्लिम समाज, बोहरा समाज, जिनगर समाज, सिख समाज, अग्रवाल समाज, महावीर युवक मंडल, प्राज्ञ जैन युवामंडल, स्वर्णकार समाज, गणेशोत्सव प्रबंध समिति, अन्ना समिति, स्थानकवासी समाज, दिगम्बर समाज, मूर्तिपूजक समाज, रामस्नेही चिकित्सालय, अम्बेश चिकित्सालय, अरिहंत हास्पिटल आदि संस्थाओं और कार्यकर्ताओं ने पूज्यवर की सन्निधि में उपस्थित होकर मार्गदर्शन प्राप्त किया। प्रातःकालीन और रात्रिकालीन कार्यक्रम में तेरापंथ समाज के अतिरिक्त अन्य लोगों की भी विराट उपस्थिति रही। विशाल पण्डाल भी श्रोताओं की बहुलता के कारण अपर्याप्त सिद्ध हुआ। ऐसा लगा मानो वस्त्र नगरी भीलवाड़ा धर्मनगरी बन गई। श्रद्धेय आचार्यवर ने भी अतिशय श्रम कर भीलवाड़ावासियों पर भरपूर अमृतवृष्टि की। आचार्यवर ने तीन दिनों में विभिन्न कार्यक्रमों और घरों में चरण स्पर्श के लिए लगभग २७ किमी. की पदयात्रा की। ऐसा कहा जा सकता है कि आचार्यवर के महाश्रम की वृष्टि में अभिस्नात भीलवाड़ावासियों के लिए यह प्रवास चिरस्मरणीय बन गया।

प्रस्थान से पूर्व प्रज्ञा भारती में

८ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने चारदिवसीय प्रभावक प्रवास के पश्चात भीलवाड़ा से मंगल प्रस्थान किया। प्रवास स्थल से प्रस्थान कर आचार्यवर काशीपुरी वकील कालोनी, रेलवे क्रासिंग, बसंत विहार, कांचीपुरम होते हुए प्रज्ञा भारती भवन पधारे। आचार्यश्री तुलसी सेवा संस्थान द्वारा निर्मित इस भवन के परिसर में संस्थान के अध्यक्ष श्री मीठालाल गन्ना आदि ने आचार्यवर का आस्थासिक्त स्वागत किया। आचार्यवर से मंगलपाठ श्रवण कर संस्थान के कार्यालय भवन का उद्घाटन श्रीमती प्यारबाई हींगड़ परिवार की ओर से किया गया। आचार्यवर ने प्रज्ञा भारती भवन का अवलोकन कर वहां चल रही गतिविधियों की अवगति प्राप्त की।

प्रज्ञा भारती परिसर में आयोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में प्रज्ञा और चक्षु गोखरू ने स्वागत गीत का संगान किया। संस्थान के अध्यक्ष श्री मीठालाल गन्ना ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। श्री संपतजी श्यामसुखा ने संस्थान का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यकर्ताओं ने संस्थान की परिचय पुस्तिका आचार्यवर को उपहृत की। भीलवाड़ा नगर परिषद के अध्यक्ष श्री अनिल बल्दवा ने आचार्यवर के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए भीलवाड़ा

में अणुव्रत मार्ग बनाने का संकल्प व्यक्त किया। नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश नारायणीवाल ने भी अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा--'आज हम आचार्यश्री तुलसी सेवा संस्थान द्वारा निर्मित प्रज्ञा भारती भवन में आए हैं। भवन का अवलोकन किया। भवन अपने आप में भौतिक उपलब्धि होती है। जैसे भवन के निर्माण में श्रम और शक्ति लगती है, वैसे ही जीवन के भवन निर्माण में अपनी शक्ति लगाएं। हमें बताया गया--यह भवन शिक्षा के उपक्रम के लिए योजित है। यहां जैनिज्म का भी प्रभाव रहे। यहां शिक्षा प्राप्त करने वालों को जैनधर्म, भगवान महावीर और तेरापंथ के सिद्धान्तों की जानकारी मिले। इसके साथ जीवनविज्ञान का भी यहां उपक्रम चले। हम भले ही यहां स्वल्प समय के लिए आए हैं, किन्तु यहां आकर अच्छा लगा। भीलवाड़ा आकर यहां नहीं आते तो एक कमी रह जाती। यहां के कार्यकर्ता और आसपास में रहने वाले लोग यहां धार्मिक गतिविधियां संचालित करते रहें।' कार्यक्रम का संचालन संस्थान के मंत्री श्री मनोहर बाफणा ने किया।

पचहत्तर वर्षों पश्चात् सुरास में

परम पावन आचार्यप्रवर लगभग १३ किमी. का विहार कर सुरास पधारे। यहां पधारने से पूर्व आचार्यवर ने नारायणपुरा के एकमात्र जैन बोरदिया परिवार के घर को भी पावन किया। लगभग पचहत्तर वर्ष के बाद तेरापंथ के आचार्य को अपने गांव में पाकर सुरासवासी प्रफुल्लित थे। उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर आन्तरिक श्रद्धा का ज्वार उमड़ रहा था। सुरास में आचार्यवर का प्रवास श्री आजाद शर्मा के निवास पर रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'संसार एक सागर है, जिसमें प्राणी निरंतर बहते जा रहे हैं। उन बहते हुए प्राणियों के लिए धर्म एक द्वीप है, प्रतिष्ठा है, गति है, उत्तम शरण है। अहिंसा, संयम एवं तप--ये धर्म के प्रकार हैं। किसी को न मारने और कष्ट न देने का संकल्प अहिंसा है। यह धर्म का प्रायोगिक रूप है। व्यक्ति यह सोचे कि जो व्यवहार मुझे प्रिय नहीं है, वैसा व्यवहार मैं दूसरों के साथ क्यों करूं? धर्म का ज्ञान भी होना चाहिए और उसके अनुरूप आचरण भी होना चाहिए। यदि ऐसा होता है तो व्यक्ति संसार-समुद्र का पार पा सकता है। व्यक्ति अपनी इन्द्रियों और मन को वश में कर ले तो अहिंसा, संयम और तप की आराधना सुगम हो सकती हैं।'

आचार्यवर ने प्रवचन के पश्चात शासनसेवी श्री विमल नाहटा एवं तुलसी दूगड़ ने पारस चैनल पर पूज्यवर के प्रवचन प्रसारण से संबद्ध पोस्टर आचार्यवर को भेंट किया। श्री नाहटा ने 'स्वाध्याय' नामक संकलित पुस्तक भी पूज्यवर को उपहृत की। उल्लेखनीय है--१ नवम्बर २०११ से पूज्य आचार्यवर के दैनिक प्रवचन प्रतिदिन प्रातः ६.५० बजे से ७.२० बजे तक और रात्रि ११.०० बजे से ११.३० बजे तक पारस चैनल पर प्रसारित किए जा रहे है।

सुरास में आठ तेरापंथी परिवार हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात पूज्य आचार्यवर उनके घरों में पधारे। रात्रि में उन्हें पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर मिला।

पीथास में हर्षोल्लास

६ दिसम्बर। परमाराध्य आचार्यवर आज प्रातः सुरास से पीथास के लिए प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती कोटड़ी के ग्रामीणों ने पूज्यवर की भावपूर्ण अगवानी की। दो भाइयों का कालिया परिवार अपने आराध्य को अपने गांव में पाकर हर्षविभोर था। राजकीय प्राथमिक विद्यालय में समायोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में जैसे पूरा गांव उमड़ पड़ा। विद्यालय परिसर के साथ विद्यालय की छत भी चारों ओर से जनाकीर्ण बनी हुई थी। आचार्यवर ने ग्रामीणों को मानव जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर की प्रेरणा से अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। पूज्यप्रवर ने उपस्थित विद्यार्थियों को भी नशामुक्ति का संकल्प करवाया।

१०.०२ किमी. का विहार कर आचार्यवर पीथास पधारे। गांव में हर्षोल्लास का माहौल था। श्रद्धालुओं का जोश दर्शनीय था। यहां पूज्यवर का प्रवास श्री सुरेशकुमार मिश्रीलाल काल्या के आवास पर रहा। पूज्यवर को अपने घर-आंगन में पाकर काल्या परिवार कृतकृत्य था।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'अहिंसा यात्रा के दौरान

आचार्यप्रवर अधिकतर गांवों में परिभ्रमण कर रहे हैं। गांव के लोगों के मन में आत्मीयता, श्रद्धा और स्नेह का भाव होता है। आज पीथास के लोगों में उल्लास है, आनंद है। यहां के लोग आचार्यवर की अमृतमयी वाणी को सुनकर अपने जीवन में परिवर्तन लाने का प्रयास करें तो आचार्यवर का पदार्पण उनके लिए अधिक सार्थक हो सकेगा।'

परमाराध्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'शुभाशुभ कर्मों के कारण अनंत आत्माएं संसार में परिभ्रमण कर रही हैं। कोई-कोई आत्मा साधना के द्वारा कर्मों का क्षय कर मोक्ष को प्राप्त हो जाती है। प्रमाद के वशीभूत जीव शुभाशुभ कर्मों का बंध करता है। अप्रमत्त व्यक्ति शीघ्र ही संसार सागर का पार पा जाता है।'

पूज्यवर ने पीथास आगमन के संदर्भ में कहा--'आज हम पीथास आए हैं। यह मुनि मुकुलकुमारजी का संसारपक्षीय गांव है। वे बचपन में ही दीक्षित हो गए थे। अच्छे बुद्धिमान संत हैं। अच्छा काम करते रहें। पीथासवासियों में आध्यात्मिक जागरणा बनी रहे।' कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों ने आचार्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

आचार्यवर के प्रवचन के पश्चात स्थानीय सरपंच श्री प्रकाश कोठारी ने आचार्यवर के स्वागत में अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ भवन भी पूज्य चरणों के स्पर्श से पावन बना। रात्रि में सभी तेरापंथी परिवारों को पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

एक घर के लिए दुगुना विहार

१० दिसम्बर। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार आज का पड़ाव घोड़ास में था और वह गांव पीथास से मात्र चार किमी. की दूरी पर स्थित है। किन्तु पार्श्ववर्ती समेलिया गांव के एक तेरापंथी परिवार की प्रार्थना पर आचार्यवर के लिए यह दूरी दुगुनी हो गई। आचार्यवर पीथास से कच्चे मार्ग से समेलिया पधारे। मार्ग के दोनों ओर स्थित मिर्ची, बैंगन, कपास, सिंघाड़े, अफीम, सरसों आदि के खेत यात्रियों का ध्यान सहज ही अपनी ओर आकृष्ट कर रहे थे तो कहीं-कहीं सपाट मैदान इस क्षेत्र को बंजर भूमि के रूप में प्रस्तुत कर रहा था। समेलिया का झाबक परिवार अपने आराध्य के पदार्पण से आह्लाद की अनुभूति कर रहा था। झाबक परिवार के निवास के बाहर चौक में समायोजित संक्षिप्त कार्यक्रम में गांववासियों ने गीत, वक्तव्य आदि के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति दी। राजस्थान के पूर्व पंचायत राज्यमंत्री श्री कालूलाल गुर्जर ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया। पूज्यवर ने उपस्थित लोगों को भ्रूणहत्या को प्रश्रय न देने का संकल्प करवाया। झाबक परिवार को पूज्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ।

आचार्यवर ने समेलिया से पगडंडी के रास्ते यात्रा करते हुए घोड़ास में प्रवेश किया। ग्रामीणों और विद्यार्थियों ने मार्ग के दोनों ओर कतारबद्ध और करबद्ध खड़े होकर आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। कुल ८ किमी. का विहार कर आचार्यवर श्री मूलचन्दजी कोठारी के आवास पर पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। वार्धक्य को प्राप्त मूलचन्दजी में आचार्यवर के इस अनुग्रह से युवक जैसा उत्साह मूर्तिमान हो रहा था। अपने अग्रज श्री ईश्वरलाल कोठारी और संपूर्ण परिवार के साथ वे आनंद के सागर में गोते लगा रहे थे।

नन्दतु सर्वे सदा

परमाराध्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के भीलवाड़ा प्रवास के दौरान आचार्यवर सहित संतों की संख्या २९ थी। आचार्यवर के वहां से विहार के पश्चात् मंत्री मुनि आदि कई संत वहीं रह गए। इसलिए अगली यात्रा में आचार्यवर सहित संतों की संख्या सोलह हो गई। आचार्यप्रवर सुरास पहुंचने वाले थे, साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां गुरुवन्दन के लिए गईं। वहां मुनि कुमारश्रमणजी खड़े थे। साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने विनोद में कहा सोलह तो सतियां हुई थी, आज यहां सोलह संत हैं, क्या हम जाप जपें? मुनि कुमारश्रमणजी ने विनम्रता से निवेदन किया आप एक श्लोक बना दीजिए। साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने गुरुकुलवासी संतों का नामोल्लेख करते हुए एक संस्कृत श्लोक की रचना की। आचार्यवर जब घोड़ास में पधारे, तब मुख्यनियोजिकाजी ने वह श्लोक आचार्यवर को सुनाया। श्लोक इस प्रकार है--

राजेन्द्रोऽथ जितेन्द्रगौतममुनी वाग्मीकुमारः शुभुः,
योगेशो मृदुविश्रुतावृषभकः सेवारतो गौरवः।
वीराऽशोकदिनेशकीर्तियतयो भद्रो विकासोव्रती,
रोलम्बा गुरुपादपद्मनिरता नन्दतु सर्वे सदा।।

आचार्यश्री महाश्रमण के चरण-कमलों की समुपासना में भ्रमर की तरह रत सभी संत सदा आनन्द का अनुभव करें। गुरु सन्निधि प्राप्त करने वाले वे सौभाग्यशाली संत हैं शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि ऋषभकुमारजी, मुनि अशोककुमारजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि कीर्तिकुमारजी, मुनि विश्रुतकुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी, मुनि विकासकुमारजी, मुनि गौतमकुमारजी, मुनि मृदुकुमारजी, मुनि गौरवकुमारजी, मुनि शुंभकरजी।

शुक्लता को प्राप्त करें

प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्री मूलचन्दजी कोठारी ने अपने उल्लसित भावों को अभिव्यक्ति दी। ह्यूस्टन-अमेरिका में साढ़े नौ मास का प्रवास संपन्न कर आज समणी अक्षयप्रज्ञाजी और समणी परिमलप्रज्ञाजी ने आचार्यवर के दर्शन किए। कार्यक्रम में समणी अक्षयप्रज्ञाजी ने अपनी यात्रा के अनुभव प्रस्तुत किए। न्यूजर्सी अमेरिका में नौ माह का प्रवास संपन्न कर कुछ दिनों पूर्व आचार्यवर की सन्निधि में पहुंची समणी सन्मतिप्रज्ञाजी और समणी जयंतप्रज्ञाजी ने गीत का संगान किया। समणी सन्मतिप्रज्ञाजी ने अपने विचार व्यक्त भी किए। खानदेश और उड़ीसा के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा कर गुरुचरणों में पहुंची समणी ज्ञानप्रज्ञाजी ने अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्ति देते हुए सहवर्ती समणीवृन्द के साथ गीत का संगान किया। अणुव्रत ग्राम भारती विनयपुरम की छात्राओं ने भी सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने संबोधि पर आधारित अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन वाङ्मय में छह लेश्याओं का वर्णन प्राप्त होता है। कृष्ण, नील, कापोत, तेजस्, पद्म और शुक्ल--इन छह नामों से अभिहित ये लेश्याएं व्यक्ति के चरित्र का चित्रण करने वाली होती हैं। ये क्रमशः पवित्र बनती जाती हैं। साधक साधना का पथ स्वीकार करता है। उसकी साधना में ज्यों-ज्यों निखार आता है, त्यों-त्यों वह शुक्लता को प्राप्त होता है और अधिकाधिक आनंद का अनुभव करता है। अप्रमाद और अकषाय की साधना के द्वारा व्यक्ति शुक्ल लेश्या को प्राप्त कर अपनी आत्मा को सिद्ध, बुद्ध और मुक्त बना सकता है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'आज हम घोड़ास आए हैं और श्रावक मूलचन्दजी कोठारी के यहां आए हैं। ये यदा-कदा आते रहते हैं। भक्तिमान श्रावक हैं। उनमें उत्साह प्रतीत होता है। आज देश-विदेश से अनेक समणियां पहुंच गईं। समणी सन्मतिप्रज्ञाजी कुछ दिन पहले ही अमेरिका से आ गई थीं। समणी अक्षयप्रज्ञाजी अमेरिका की यात्रा कर आज आ गई। समणी ज्ञानप्रज्ञाजी खानदेश और उड़ीसा की यात्रा करके आई हैं। हमारी समणियां देश-विदेश में अपने-अपने ढंग से कार्य करती हैं। जिस प्रकार द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव आदि होते हैं, उसी प्रकार कार्य करना होता है। विदेश में आहार आदि की कठिनाई हो सकती है, किन्तु जिसे कार्य करना होता है, उसे कठिनाइयों की परवाह नहीं करनी चाहिए। समणी अक्षयप्रज्ञाजी नियोजिका के रूप में कार्य कर चुकी हैं। समणी सन्मतिप्रज्ञाजी, समणी जयन्तप्रज्ञाजी, समणी परिमलप्रज्ञाजी और समणी ज्ञानप्रज्ञाजी भी वर्षों से कार्य कर रही हैं। अब ज्यों-ज्यों अवस्था आए, साध्वीप्रमुखा के निकट आने (साध्वी बनने) का प्रयास करें।' पूज्य आचार्यवर ने अपने प्रवचन के पश्चात कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया। कार्यक्रम का संयोजन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बाग-बाग हुआ बागोर

११ दिसम्बर। परम पावन आचार्यवर ने प्रातः घोडास से बागोर की ओर विहार किया। सर्दी का मौसम अपने कड़कड़ाते तेवर के साथ लोगों को ठिठुरने के लिए विवश कर रहा था। जहां गर्म कपड़ों में दुबके हुए लोग उससे बचने के लिए अग्नि का आतप ले रहे थे, वहीं महातपस्वी महापुरुष अपने कष्ट की परवाह किए बिना जन-जन का आतप हरने के लिए निरन्तर यात्रायित था। मार्गवर्ती करणवास और भावलास के ग्रामीणों को परम

पूज्यपाद का पावन पाथेय प्राप्त हुआ। अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्त बनने का संकल्प स्वीकार किया।

आचार्यवर १०.१ कि.मी. का विहार कर बागोर पधारे। तेरापंथ द्वितीय आचार्य भारमलजी की द्रव्य दीक्षाभूमि और शासन स्तम्भ मुनि नथमलजी की जन्मभूमि पूज्यचरण कर स्पर्श पाकर बाग-बाग हो गई। सर्वत्र उत्सव का-सा वातावरण नयनों का विषय बन रहा था। आचार्यवर स्वागत जुलूस के साथ राजकीय प्राथमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यही पर हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में उपस्थित जनता को पापकर्म से दूर रहकर अधिकाधिक शुभयोगों में रहने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यवर ने बागोर आगमन के प्रसंग में कहा--'आज हम बागोर आए हैं। भारमलजी स्वामी जैसी पुण्यात्मा की द्रव्य दीक्षा यहीं हुई थी। बाल्यावस्था में उन्हें मुनि भीखणजी (आचार्य भिक्षु) से दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह एक महान व्यक्तित्व था, जो तेरापंथ को द्वितीय आचार्य, सिरमौर, सरताज के रूप में प्राप्त हुआ। आचार्य भिक्षु के उत्तराधिकारी के रूप में प्राप्त हुआ। बागोर आकर उस महान पुण्यात्मा को वंदना करता हूं और श्रद्धा के साथ उनकी स्मृति करता हूं। आज मैं नथमलजी स्वामी बागोर का भी स्मरण करता हूं। उन्हें तो मैंने देखा भी है। वे गुरुदेव तुलसी से दीक्षा पर्याय में ज्येष्ठ थे। ज्ञान की दृष्टि से भी वे तेरापंथ के एक विशिष्ट मुनि थे। 'भिक्षु महाकाव्य' जैसे ग्रंथ का निर्माण करना उनकी भिक्षु स्वामी के प्रति अगाध श्रद्धा और संस्कृत भाषा में उनके अदुष्य वैदुष्य का परिचायक है। उनमें शास्त्रों का कितना ज्ञान था। उन्हें एक ज्ञानी संत के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। गुरुदेव तुलसी ने उनकी विद्यमानता में ही उन्हें 'शासनस्तंभ' के संबोधन से संबोधित किया। मैं आज बहुत सम्मान के साथ उनकी स्मृति करता हूं। मुनि वृद्धिचन्दजी स्वामी, जिन्होंने रत्नावली तप किया था, वे और मुनि हेमचन्द्रजी स्वामी भी यहीं के थे। इन सब दृष्टियों से देखा जाए तो बागोर तेरापंथ का एक ऐतिहासिक क्षेत्र है।' पूज्यवर ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प भी करवाया।

बागोर में तेरापंथ समाज के तेरह घर हैं। सायंकालीन आहार के पश्चात वे सभी घर पूज्यवर की चरणरज से पावन बने। स्थानीय तेरापंथ भवन में भी आचार्यवर का पदार्पण हुआ। रात्रि में स्थानीय परिवारों को आचार्यवर की उपासना का अवसर प्राप्त हुआ। लोगों ने पूज्यवर की प्रेरणा से विविध संकल्प स्वीकार किए।

संघ प्रभावना के उपक्रम

देश के विभिन्न प्रान्तों में धर्मसंघ की प्रभावना के विविध उपक्रम समायोजित होते रहते हैं। कतिपय उपक्रम यहां उल्लिखित किए जा रहे हैं--

- गत १७ नवम्बर को सरदारशहर के पार्श्ववर्ती गांव बंधनाऊ में पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा के उपलक्ष्य में प्रारंभ आदर्श ग्राम विकास परियोजना के अंतर्गत निर्मित 'आचार्य महाप्रज्ञ राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय', 'आचार्य महाप्रज्ञ अवेदना आश्रम' (चिकित्सालय), सड़क, बिजली, पानी आदि परियोजनाओं का लोकार्पण भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने किया। मुनि विनयकुमारजी के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रपतिजी ने अपने वक्तव्य में अनेक बार परम श्रद्धेय आचार्य महाप्रज्ञ का श्रद्धा के साथ स्मरण करते हुए उनके अवदानों को व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए हितकारी और अनुकरणीय बताया। कार्यक्रम में राजस्थान के राज्यपाल श्री शिवराज पाटिल आदि महानुभावों की भी गरिमामय उपस्थिति रही। इस संपूर्ण परियोजना के संचालन और कार्यक्रम के आयोजन में सरदारशहर निवासी जयपुर प्रवासी श्री जबर चिंडालिया का निष्ठापूर्ण श्रम उल्लेखनीय है।
- पिछले दिनों दिल्ली नगर निगम शिक्षा विभाग के चेयरमैन डॉ. महेन्द्र नागपाल ने परम श्रद्धेय आचार्यवर को प्रेषित पत्र में जानकारी दी--मुनि राकेशकुमारजी की प्रेरणा से आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के अंतर्गत दिल्ली नगर निगम शिक्षा विभाग द्वारा ४ नवम्बर २०११ को 'नशामुक्ति दिवस' मनाया गया। इस दिन १७२६ विद्यालयों में समायोजित कार्यक्रम में लगभग इक्कीस हजार शिक्षकों और दस लाख विद्यार्थियों ने नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण किया। यह दिल्ली नगर निगम शिक्षा विभाग के लिए एक उपलब्धि है।
- गत दिनों दिल्ली में मुनि जयकुमारजी आदि मुनिवृन्द और अनेक कार्यकर्ता कांग्रेस महासचिव श्री राहुल गांधी से मिले। श्री गांधी को तेरापंथ धर्मसंघ के अवदानों से अवगत कराया गया। श्री गांधी ने गांधी नेहरू परिवार के साथ तेरापंथ धर्मसंघ के संबंधों और संस्मरणों को सुनकर प्रसन्नता व्यक्त की।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

- विगत २० नवम्बर को दिल्ली में पी.एचडी. चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज तथा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा दिल्ली द्वारा मुनि जयकुमारजी की सन्निधि में 'आचार्य महाप्रज्ञ स्मृति व्याख्यानमाला' के अंतर्गत 'सस्टनेबल डेवलपमेंट थ्रू एथिक्स एण्ड वेल्यू बेस्ड एज्युकेशन' विषय पर व्याख्यान का समायोजन किया गया।

कार्यक्रम में कांग्रेस आई प्रवक्ता डा.अभिषेक मनु सिंघवी, भाजपा प्रवक्ता श्री प्रकाश जावडेकर आदि वक्ताओं ने निर्धारित विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। इस व्याख्यानमाला में राजधानी के अनेक उद्योगपति एवं समाजसेवी संभागी बने।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- स्व. श्रीमती पुष्पादेवी रायजादा (धर्मपत्नी-श्री चन्दनमलजी रायजादा, फतेहपुर-कोलकाता) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू नरेन्द्र-ललिता, रवीन्द्र-सुमन, गजेन्द्र-प्रीति, सुपौत्र उज्ज्वल, गौरव, ऋषभ रायजादा द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व. श्री पुखराजजी गेलड़ा (हरनावां-मदनगंज-किशनगढ़) के प्रभावक संथारे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र माणकचन्द, मदनलाल, महावीरचन्द, विमलचन्द, अशोककुमार, सुपौत्र सुरेन्द्र, अजय, प्रतीक, राहुल, अंकित, पुलकित व प्रपौत्र जॉय, नमन, प्रथम गेलड़ा एवं समस्त गेलड़ा परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. सुमेरमलजी धारीवाल (छोटीखाटू) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गणपतीदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू सुरेश-अनिता, गौतम-सुमित्रा, पंकज-ज्योति, विकास-सुमन, सुपौत्र अर्हम, अनीस, शुभम, सुपौत्री नेहा, निकिता, प्रेरणा, मुस्कान, समता, यशा एवं एकता, तेजपुर (असम) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण के तुलसी अमृत महाविद्यालय गंगापुर में पावन पदार्पण एवं शांतिदेवी-नानकचन्द तनेजा परिवार (धुलिया) द्वारा महाविद्यालय को नई बस प्रदान करने की घोषणा के उपलक्ष्य में महाविद्यालय प्रबंध समिति, द्वारा-शासनसेवी श्री बाबूलालजी कच्छारा (अध्यक्ष) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- चि. निलेश (सुपौत्र-स्व. हीरालालजी-गट्टूबाई नोलखा, दौलतगढ़-कांदीवली मुम्बई) सह सौ. निकिता (सुपुत्री-सुरेशकुमारजी-मंजुदेवी लोढ़ा, गोगुन्दा-सूरत) के शुभ विवाहोपलक्ष्य में जंवरीलाल-निर्मला नोलखा द्वारा प्रदत्त।

प्रेक्षा पुरस्कार के लिए योग्य साधकों के नाम आमंत्रित

मोहनलाल कठोतिया सेवा कोष, दिल्ली द्वारा प्रतिवर्ष प्रेक्षाध्यान के एक विशिष्ट साधक एवं प्रशिक्षक को अक्षयतृतीया के अवसर पर प्रेक्षा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया जाता है। सन् २०१२ के प्रेक्षा पुरस्कार के लिए योग्य साधक का चयन संस्था की निर्वाचित समिति का द्वारा किया जाएगा। उक्त निर्वाचित साधक के नाम की घोषणा मर्यादा महोत्सव के पुनीत अवसर पर आगामी ३० जनवरी २०१२, सोमवार को आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में आमेट (राजस्थान) में की जाएगी।

जो भी व्यक्ति अथवा संस्था योग्य साधक के नाम का सुझाव देना चाहें, वे उनके ध्यान साधनामय जीवन का संक्षिप्त विवरण हमारे कार्यालय में इस पते पर अतिशीघ्र भिजवाएं--मोहनलाल कठोतिया सेवा कोष, कठोतिया भवन, १५३२, चन्द्रावल रोड, दिल्ली-११० ००७, फोन नं.(०११)२३८५३८६२, मो. ९३११०५३१११,

आदर्श साहित्य संघ का शिविर कार्यालय पूज्यप्रवर की सेवा में संलग्न है। पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा आमेट
पो. चारभुजारोड-३१३ ३३२, जि. राजसमन्द (राजस्थान) फोन : ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**